सनातन धर्म सभा

पोष्ट अदगावपुर (फैजाबाद)

रामाभिषेक नाटक

अर्थात्

श्री रामचन्द्रजी का अधिवास और बनवास

श्रीरामगोपाल विद्यान्त द्वारा अनुवादित।

"यच्चिन्तितमतदिह दूरतरम्प्रयाति
अच्चेतसानगणितम् तदिहाऽभ्युपैति।
प्रातर्भवामि वसुधाधिप चक्रवर्त्ती
सोऽहन्व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी॥"

रामायण।

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के सीसाक्षर यन्त्रालय में वाजपेयि
पण्डित रामरत्न के द्वारा शुद्ध होय मुद्रित हुवा।

एप्रिल सन् १८७७ ई०

ग्रन्थार्पण ।

विमल यशोभाजन श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीयुक्त राजा दिग्विजयसिंह बहादुर के, सी, एस, आई, विद्योत्साहि महोदयेषु ॥

आपको स्वदेश के हित साधन रूप ब्रतमें सदैव काय मनो वाक्य से नियुक्त देखकर और सुयोग्य सुपुरुष जानकर आपके कर कमल में मत्प्रकाशित हिन्दी रामाभिषेष नाटक पुस्तक अर्पण करते हैं ॥

आश्रित जनस्य श्रीरामगोपाल विद्यान्तस्य ।

भूमिका ।

इस समय तक लखनौस्थ विद्यान्त नाट्यशालामें बंगला भाषा में नाटक का अभिनय होता है वह अत्र देशीय महज्जनों के समझ में नहीं आता; सुतराङ्ग उन लोगों को विशेष आनन्द प्राप्त नहीं होता, इस कारण सर्व्वजनों के मनोरंजनार्थ नागरी भाषा में अभिनय करने के लिये इस पुस्तक का अनुबाद किया ।

देवनागरी हमारी मातृ भाषा नहीं है, इस कारण भाषा गत दोष अवश्य हुवा होगा—

प्रार्थ्थना है कि सज्जन पण्डित गण क्षमा करैं और यदि संशोधन करके हमको लिखें तो अत्यन्त उपकृत होंगे ॥

श्रीरामगोपाल विद्यान्त ।

लखनऊ आश्विन शुक्ल दशमी संवत् १९३३

नाट्योल्लिखित व्यक्ति गण ॥

पुरुष गण

राजा दशरथ……………………………अयोध्याराज

रामचन्द्र ………………………………… ज्येष्ठपुत्र

लक्ष्मण ……………………………… तृतीय पुत्र

वशिष्ठमुनि ………………………………… कुल गुरु

सुमन्त्र ……………………………………… मन्त्री

विदूषक ………………………………………पारिषद

पण्डित , भृत्य, राजदूत, किसान इत्यादि ॥

स्त्री गण

कौशल्या …………… राजा दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी

कैकेई………………………………… मध्यमापत्नी

सुमित्रा ……………………………… कनिष्ठा पत्नी

जानकी………………………… रामचन्द्र की स्त्री

उर्म्मिला………………………………लक्ष्मणकी स्त्री

बासन्ती……………………………… सीता की सखी

चित्रा…………………… कौशल्या की परिचारिका

मन्थरा …………………………… कैकेई की दासी

शुद्धाशुद्ध पत्र

सफा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१५	भसा	सभा
५	१३	मिला	मिला है
५	१६	चन्द्र	चन्द्रका
७	१३	करूत	करत
८	३	चोरि	चोर
८	११	दैओ	देवे
६	१३	ढटारा	ढंढोरा
१०	१७	मूर्खराजा-	अरे मूर्ख राजा
१२	१८	याद	सुधि
१३	४	माफहोगा	छोड़ देंगे
१४	१६	राज्यसिंहासन	राजसिंहासन
१४	१८	ओर	और
१५	३	समरथ	जवान
तथा	४	राज	राज्य में
तथा	५	समरथ	जवान
२७	११	नीताच	नेताथ
तथा	११	स्म्रतः	स्मृताः
२६	३	सीता	सीताका
तथा	११	उचितत	उचित
३५	१६	तनरुचि	तनुरुचि
३६	१५	पतित्व वर्णन	पतिमानके वरण
३८	१।	प्रस्था	प्रस्थान
४१	१६	सीतानुसार-	सीतानुसार
४४	७	सौंपा	सौंपा था
४५	३	तुम्हारी कुदृंकि	तुम्हारी कुदृष्टि
४६	७	दुखी	दुःख
५१	६	सब	अब
५२	२	अंगीकर	अंगीकार
५३	६	हाथा	हाथ
५४	१७	हृदस	हृदय
५६	१२	पापिष्ट	पापिष्ठा
५८	५	[स्वागत]	[स्वगत]
५६	१०	ढूंढन	ढूंढने
६३	४	[स्वागत]	[स्वगत]
६४	११	राजिम्यारै	राज मोरै
६५	१६	करकेसंघट कियागया है	किये गये हैं

सफा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१	बर्णीया	वरणीया
तथा	९	[स्वागत]	[स्वगत]•
६८	४	हमार	हमारा
तथा	७	तदनुकूल	तदनुरूप
६९	५	[स्वागत]	[स्वगत]
७१	१६-१७	ममत्व	गौरव*
७२	५	कि सर्वसुख	सर्वसुख
७२	११	देवाधि	देवादि
७३	९	हा	होने
७५	४	पुरीघटस्थापन	घटस्थापन
७६	८	*[स्वागव]	[स्वगत]
७७	५	स्वस्तय	स्वकथन
७८	५	हुआ ह	हुआ है
७९	३	मुझ	मुझे
७९	५	हमन	हमने
७९	१४	दु:खनी	दु:खिनी
८३	४	प्रतिपाल	प्रतिपालन
८९	४	अनुमत	अनुमति

सफा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९०	५	तुमको	तुम्हारा
९५	७	मध्य	मध्यमा
१००	२	विपघर	विषधर
१०३	४	भयकर	भयंकर
तथा	१९	ऐसोभयानक	-भयानक
१०८	६	उर्मला	उर्म्मिला
तथा	९	"जोहमलोगों	-कि "हम लोगों
११२	४	पानके	पानकरके
तथा	७	सुशीत	सुशीतल
तथा	१४	ससराल	श्वशुरालय
११३	१७	[स्वागत]	[स्वगत]
११८	३	उसके	उनके
तथा	१९	समृद्ध	समृद्धि
तथा	१९	धोका	धोखा
१२३	१७	दुखदाई	दुखदायी
१२५	१९	सुमन्त	सुमंत्र
१२७	३-७-८-१०-११	सुमन्त	-सुमंत्र
१२९	८	मूल्य	बहुमूल्य
१३२	१०	पटवेक्षण	पटक्षेपण

इति

रामाभिषेक नाटक

प्रथम अङ्क ।

प्रस्तावना ।

(नटका रङ्गभूमि में प्रवेश)

नट-(चारों ओर देखकर) हाहा सभाकी क्या अपूर्व सुन्दर शोभा हो रही है, धनवान्, ज्ञानवान् माननीय, भावग्राही, रसग्राही, गुणग्राही, महाजन लोग सभा में बैठकर आलोक मालाकी शोभा से अधिक देदीप्यमान होकर सभा मण्डपकी असाधारण शोभा को उत्पन्न करते हैं। और हमारे सरीखे तुच्छ मनुष्य से प्रकाशित, और नाटक का अनुरूपमात्र यत्सामान्य अभिनय दर्शन के लिये जो धीरज धरके बैठे हैं यह क्या सामान्य महज्जनोंका काम है; अथवा सज्जनोंका स्वभाव ही ऐसा होता है। अब विलम्ब करना उचित नहीं है। इन भद्र

सदों की संगीत लालसा अधैर्य्य न होतेही प्यारी को बुलाकर संगीत का प्रारम्भ करें (नैपथ्य की ओर मुख करके) प्यारी शीघ्रता करो। अभी नहीं आई? क्या लज्जाकी बात है अब तक शृंगार नहीं किया॥

नैपथ्य की ओर पुनर्वार देखकर॥

स्वगत-यह गज गामनी आती है—प्यारी का जैसा मुनि जन मनोहर मधुर स्वर वैसाही क्या सुललित सुसंगत ताल लय विशिष्ठ गीत का गाना आज इस सुजन रंजित सभा में सुरसिक जनों के श्रुति पथ में अमृत वर्षण कर के उन के हृदय को संतुष्ट करेगा परन्तु जो सभास्थ सुजन लोग हमारी आंखों से उनको देखें और हमारे कान से गाना सुनें तो निस्संदेह मोहित हो ही जांयगे॥

नटी का प्रवेश॥

नटी-हे प्राण नाथ मुझे काहे को पुकारा है? हम उस फुलवाडी में फूलों को बीन २ के हार बनाती थी और यह गुच्छा फूलों का बांध रही थी और इधर उधर टहल कर शारदीय पूर्णचन्द्र

की शोभा देख रही थी और शोचती थी कि आप वहां कब आवेंगे अहाहा हमारी कुंज की कैसी सुन्दर शोभा हो रही है भांति २ के फूल फूल रहे हैं और हारसिंहार के फूलों की गन्ध से चारों ओर के उपबन सुगन्धित हो रहे हैं और वे चन्द्रमा की किरणों के मारे और भी शोभा दे रही हैं ऐसा समय ऐसा स्थान छोडकर क्या मनुष्यों को गरमी में घर के भीतर रहाजाय॥

नट—प्रिये क्या तुम को अकारण बुलाया है, देखो तो कैसे २ बडे आदमी यहां बैठे हैं, इन लोगों के संतोष साधन के लिये तुच्छ बिलास सुख को त्यागनाहीं उचित है। अब कहो तो सही संगीत सुधा लोलुप इसी गुण ग्राहक समाज में कौन रस और कौन काव्य आश्रय कर के अभिनय किया जायगा॥

नटी—प्राण नाथ तुम क्या हमारी हंसी करते हो। हम तुम को क्या कहेंगे हम स्त्री जाति हज़ार जाने तौ भी मूर्ख हैं। हम को रस वा काव्य-कुछ भी समझ नहीं पड़ता है, तुम्हारे रसमें

रस और काव्य में काव्य। छाया क्या देह से भिन्न व्यापार कर सकी है॥

नट—प्रियसी इन्हीं गुणों से तैंने हमारे मन को प्रेम रज्जु में बांध रक्खा है। सो जाने दो अब क्या कर्तव्य है? हम कहते हैं कि शांति रसका कुछ अभिनय दिखावें॥

नटी—नहीं २, तुम्हें क्या विदित नहीं? अब के जो नवीन लोग हैं शांति रस का श्रवण और शांति-पाठ का जल ग्रहण इन दोनों को समान जानते हैं इस सभा में ऐसेही लोग अधिक हैं, इसलिये इन लोगों का जिस में मन प्रसन्न होवे सोई करना चाहिये॥

नट—प्रिये आज काल पर क्या है, सदैव सर्व देश में नव्यजन शांति रस को तजते और शृंगार रस को भजते हैं यह केवल वयो धर्म है आज कलकी नवीन संप्रदाय में ऐसे मनुष्य बहुत से हैं जो वात्सल्य सख्य और करुणा रसादिकों में अनुराग करते हैं और इन लोगों को विमल कविता रसास्वाद व गान विद्या में शुद्ध प्रीति होने

से पूर्व काल प्रचलित नाट्याभिनय पुनःप्रचलित होताहै। इन लोगों के मनों में यह अभिलाष है कि अभिनय के नायक और नायिका का निर्मल चरित्र होय; इसीलिये हमारा यह मनोर्थ है कि कोई सत्यवादी, जितेन्द्रिय, शान्त, दान्त, धीर, वीर पुरुष के विषय में करुणा रस घटित अभिनय दिखलाने से जैसा इस गुणज्ञ मण्डली में सर्व मनोरंजन होगा ऐसा और कहीं न होगा॥

नटी—नाथ यह बात तो कहने सुनने में अच्छी है परन्तु एकही आधार में इतने गुणो का मिलना कहां है! फिर करुणा रस!!

नट—क्यों प्यारी तुम को क्या स्मरण नहीं है कि रामाभिषेक नामक एक नूतन नाटक मिला उसमें ऐसा ही प्रसंग है; सर्वगुणाधार सर्व लोकाभिराम श्री रामचन्द्र सरीखे नायक, और रामचन्द्र राज्याभिषेक के उद्योग से उन का बनवास और राजा दशरथ की मृत्यु का विवर्ण उस के विषय है, ऐसे पवित्र चरित्र नायक और ऐसा करुणा रसोपशोभित विषय कहां

मिलेगा। से आज उसी का प्रारम्भ किया जाय॥

नटी—ते ऐसाही करो

रागिनी मल्हार॥

ताल इकताला॥

नव जल घन: राम रघुवर: विराजे अयोध्या मांझे।
कैसे विराजे अयोध्या मांझे॥

हर शरासन करके भंग: मिली तहां जानकी संग: परम पवित्र प्रणाय प्रसंग: अपरूप रूप साजे॥

अजानु लम्बित: बाहु सुललित: कुदंड शोभित बांहे: लोकाभिराम: गुण अनुपम: जगजन मन मोहे। अति गम्भीर धीर शान्त: सुशील सरल चित्त एकान्त: अनुज गण प्रिय नितांत: विजयी समर काजे॥ कैसे विराजे अयोध्या मांझे॥

(नैपथ्य में ढढोरे का शब्द सुन के)

नट-प्रिये सुनो महाराज दशरथ अपने प्रिय पुत्र श्री रामचन्द्र को युवराज में अभिषेक करेंगे; से वही राजदूत नगर में ढंढोरा देरहे हैं चलो हमलोग इधर चलें वह आता है॥

प्रथमाङ्क।

अयोध्या राजमार्ग

तूर्यध्वनि करते हुये राज दूतका प्रवेश

घोषणा ॥

अयोध्यावासी सबलोगो जो हम शुभ समाचार सुनाते हैं सोसुनो: राजाधिराजेन्द्र दशरथ महाराज, जिनको नरेन्द्र और सुरेन्द्र पूजते हैं उनका ज्येष्ठ पुत्र-उत्तम वीररामचन्द्र धीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, गंभीर, विक्रम को सुलग्न शुभ दिवसमें कलके दिन राज्या-भिषेक करेंगे ॥

हल और फड़ुआ लेकर दो किशान आये ॥

प्र० कि-मामा हो-उ भों भों कहत फिरत है औ काका कहत है ॥

द्वि० कि-तूकां यह नाहीं समझ्झ पडत है ? तुरई कधों कहत है। और कोन मनई बजावत फिरत है वहिका राज दूत कहत है ॥

प्र० कि-और उ कहत का है मामा ॥

द्वि०कि-हां धो कछु तो कहत है, रह अबकी बेर नीको तना सुनलेउ ॥

पुनर्वार तूर्यध्वनि और घोषणा।

ओ: अब समझ पडा रे पडा इससे तो सत्यानाश हो गया अब मरे ॥

प्र०कि काहे मामा? सत्यानाश हुआ ऐसा का कहा उसने?

द्वि०कि और काकहौ! यही कहत हैं कि राजपुत्र रामचन्द्र काल पहलेहो पहले गद्दीपर बैठि हैं ओहो सबका जनावत फिरत हैं। तो जो राजा के अलग पोत देवोको पड़िहै और बिटवाको अलग देवेकोपडि है तो हमपच मरे! दुहरीपोत देकर हमलोग काहे उभरि हैं ॥

प्र०कि (विचारकरके) सोई तो मामा अब काकरी, हम लोगोका राजा अस नहोई हमका जानपड़त है कि बुतवा की बोली तुहिका समुझ नाहीं पड़ी ॥

द्वि०कि (क्रोधकरके) मुहिका समुझ नहीं पड़ी तुहिका समुझ पड़ी! राज दरबार में जातर मोरपांव

खियाय गया भलमनसों में रहत २ जन्म बीत गया तो सुन्हिको इतनोह सूझ न पड़ी? काहम नाहीं जानित है कि राजा दशरथ हम सबको बापको बराबर पालन करत हैं वा जो कहत है कि बिटवा ह राज करी यहिते दुबिधा आन पर्डत है ॥

सुटिया साथलिये पण्डित का प्रवेश ।

प्र० कि-मामा तू रिसियाश्रो ना भल तनी पंडित से तो पूछो ॥

द्वि० कि-(क्रोधसे) तू पूछले, मन्हिको पूछेको न पड़ी ॥

प्र० कि-पांव छूई पंडित जी—ऊ दूत भों भों करत है औ काकाकहत फिरत है पंडित महाराज ?

पं—अरे ऊ ढढोरा देता है कि कल महाराज अपने प्रियपुत्र गुणाकर रामचंद्र को युवराज में अभिषेक करेंगे ॥

प्र० कि-मुन्हिको तो कुछह समझ नाही पड़ा तू का कह्यो ॥

पं—क्रोधसहित-दूरहो मूर्ख। हमको शीघ्र राजसभामें जाना है तुमको पढ़ानेका समय नहीं है ॥

प्र० कि-महाराज तुमार पांवधरी मोको समुझायदो ॥

पं—अरे काम रामराजा छइहैं यही जनावत फिरत है। काहे अब समझो कि नाहीं ?

प्र० कि-हां महाराज तुमरी दयासे अब समझेउं, पर एक बड़ा संदेह होत है बुढ़ौ तो अबहीं जीवत है, फिर बिटवा काहे राजकरी ?

चाकर पंडित जी चलो हमार गटई पिराय लाग ॥

पं - (किशानकीओरमुहकार) अरे बाबा दशरथ हे राजा, रामचन्द्र होंगे युवराज, क्यों तू अब समझा ?

प्र० कि-नहीं महाराज ॥

पं—अरे बेटा जैसे बड़ा राजा और छोटा राजा। अबतो समझो ?

प्र० कि-हां महाराज थोड २ समझो ॥

प्र—आ ! अबभी कहताहै थाडा २ समझा ! तेरे किशान की ऐसी तैसी। क्या झझट में पडे ! इस मूर्ख ऐसा कोइ हमारा विद्यार्थी होताता हमारी पाठशाला बड़ी उज्ज्वल होजाती। मूर्ख राजा अब बूढ़े होगये हैं सब राज काज अकेले नहीं कर सक्ते हैं, विशेष कर रामचन्द्र थोड़ेही दिवसोंमें सम्पूर्ण राजकाज

में योग्य होगये हैं सोइ राजा उनको युवराज अर्थात् छोटा राजा करेंगे ।

प्र० कि भल येतो हम समझा, पर एक राज्यमें दोराजा ठहरे तो पोत किहिका देबे पड़ी ॥

पं–अब तुमारा भेद हमने पाया सो तुमको कुछ भय नहीं तुम लोगों को कोई प्रकारका भय नहीं। पोत एकही जगह देना पड़ेगा दो जगह नहीं देना पड़ेगा ॥

प्र०कि०–मामा अब सुनो पंडित जो कहत है उहि म एक रत्ती इधर उधर न होइ ॥

पुनर्वार तूर्य्यध्वनि ॥

पं०–अरे राज दूत तू इधर तो आव तुझ से कुछ कहना है ॥

रा०दू० (दगडवत कर के) क्या आज्ञा महाराज ॥

पं०–भला जो जो शब्द और बातें कहीं वो हमने तो सब समझीं पर ये किशान और गवांर लोग तो एक बात भी नहीं समझे ये तुमरी पदावली की टीका और व्याख्या करते २ हमारे प्राणों पर आय पड़ी ॥

रा०दू०-आपने अच्छी आज्ञा की आज्ञा हो तो इन लोगों के लिये गंवारी बोली में समझावें ॥

पं०-आज्ञा की कोन आवश्यकता है ॥

(पण्डित और चाकर का प्रस्थान)

(राज दूत तूर्यध्वनि करते हुये)

सुनो भाइयो कल राम राजा हुइहैं आज उनका अधिवास है राजा की इच्छा यह है लूले अंधे लंगड़े अपाहिज राजद्वार पर आकर मुंह मांगा दान पावेंगे और यह भी सुनो कि महाराज एक साल का पोत भी छोड़ देवेंगे अब घरमें डगर में खेत में खलिहान बजार हाट बाट में बधाई गाते नाचते फिरो ॥

दूतका प्रस्थान ॥

द्वि०कि-अरे अब की तो भल कहिस आधें का पोत न देबे का होई, का यह सांचही कहत है ॥

प्र०कि-काहे, सुना मैं जो कहा रहा सोही फुर भवा दोहाई पोत दैबे का समुझ कर तू तो घबराय गवा रहा पर मैं तो जानत रहा हमार राजा बड़ा नीक है। तुहिका यहबात याद नाहीं है अब

राम चन्द्र जन्मे रहे तब भी तो एक साल का पोत नाहीं देना पडा तो बड़ो रामचन्द्र अब राजा होत हैं यह तो बड़ी खुशी का काम है यह बदे एक साल का पोत और भी माफ होगा। तू इहिका नाहीं समझा और घबडा गया सच पूछ तो तू आजकल डरपोक हो गवा है। इस बुढ़ापे मे तीसर ब्याह कारके तुहका रुपैया का बड़ा मोह होइ गवा है, चलो अब चलो सामी का खुश खबरी सुनाई और महाराज के गुण गाई अच्छी तना खाई पिई ॥

(गीत गाते २ दोनों का प्रस्थान)

सुख सागर में प्राण बहत हैं

राजा राम गुण हृदय जागत हैं ॥

द्वितीयाङ्क।

प्रथम गर्भाङ्क।

राम मन्दिर का रनवास

कौशल्या और चित्राकी एकत्र स्थिति।

कौ० चित्रा अभी तूने अच्छे प्रकार से सुन आई है, कहतो सखी तूने यह शुभ समाचार किसके मुखसे किस भांति से सुने हैं॥

चि० महारानी क्या मैं यह शुभ समाचार भले भांत न सुनूंगी यह क्या कुछ सामान्य बातहै जो ऐरे गैरे मनुष्य के मुहसे सुन कर चुप बैठ रहूंगी जैसेही मैंने चाकरों के मुहसे कानाफूसी सुनी तैसेही पुरोहित से अपनी लड़की के गवन का मुहूर्त पूछने के मिससे राज सभाकी ओर घुसकर गई, वहां जाकर देखा कि राज सभा में प्रधान २ लोग अपने २ स्थान पर खड़े हुये थे उनमें से एक मनुष्य ने राज्य सिंहासन के पास बढ़कर रामचन्द्र की कितनीक प्रशंसा की-राम बड़े शान्त-बड़े सुबोध बड़े धर्मिष्ठ ओरउन्होंनेराज

काज सम्पूर्ण सीख लिया है ऐसी २ कितनी एक बातें कहीं तिस पीछे कहा महाराज हमलोगों का यह मनोर्थ है कि अब आप राम को-समरथ राज अभिषेक करो ॥

को० (हंसकर) नहींगी समरथ राजनहीं युवराज ॥

चि० हां हां ठीक २ यही बात कही ॥

को० फिर ॥

चि० फिर महाराज ने कहा रामको राजा करने के विशेष क्या प्रसन्नता की बात है, तब राजा ने उसी समय ज्योतिषी को बुलाकर मुहूर्त के लिये अ ज्ञा दी ज्योतिषीने पचाङ्ग देख कर कहा महाराज कलका दिन उत्तम है-फिर राजाने वशिष्ठजी और क्या जानें कौन २ मुनियों से पूछा कि इस विषय में आप लोगों का क्या सम्मत है उन लोगोंने कहा शुभ काम तुरन्त करना चाहिये कलही राम राजा हों-राजा ने जैसेही अंगीकार किया तैसेही सब लोग महाराज की जयहोय जयहोय कहते हुये अपने २ घर चले गये और राजाने सुमन्त मंत्री से कहा नगर में

ढंढोरा फेर दो और रामचन्द्र को मेरे पास बुला लाओ॥

कौ० फिर तूने मेरे रामचन्द्र को राज सभा मे आते हुये नहीं देखा॥

चि० हां हम क्या बिना देखे ही चली आई बहुत देर लग ठाढ़ी रही, रामचन्द्र आय, महाराज को परनाम किया, फिर राजा ने रामका चूमा लेकर गोदीमें ले सिंहासनपर बैठाया और कहा राम तुमको कल हम राजा करेंगे। यहांतक देख सुन कर हम चली आई, और भी हम टिकती परक्या जानें और दूसरी कोई आपको आकर यहसमाचार पहले कहदे इस लिये झट पट लौटआई॥

कौ० चित्रा तैने आज हमको ऐसे शुभ समाचार सुनाये हैं जो मैं तुझे कुबेर की सम्पत्ति भी देऊं तोभी इसके ऋणसे उद्धार नहोऊं। अये चित्रा जब दश मनुष्यके मुहसे अपने पुत्रकी प्रशंसा सुन पड़े तब माता के जीमें जितना सुख होता है वह माताही को जान पड़ता है, मेरे राम राजा होंगे इसबात से तो मुझे इतना आनन्द

नहीं हुआ (क्योंकि जब मेरे राम ने राज वंश में जन्म लिया है तो आज वा कुछ दिन पीछे राजा अवश्य होंगे) पर प्रजा लोगोंने सभा में आकर राजासे रामचन्द्र का सुयश वर्णनकरके उनको राजा करने के लिये हठकरके अभिलाष किया, इसबातसे जितनाकि हमारा चित्त प्रफुल्लित हुआ तुझसे क्या कहूं (कंठहार का देना) इस समय यह किंचित तो लो यदि देवता भला करेंगे तो फिर तुझको अच्छी प्रकारसे संतुष्ट करूंगो॥

चि० (हारलेकर प्रणाम करना) माई आपकी मीठी बोलीसेही हिया शीतल होताहै। तो ऐसी महारानीके सन्तानको सर्वजन प्यारकरेंगे और भला कहेंगे, यह क्या कुछ अचम्भेकीबातहै? तुमने मुझे ऐसा अनमोल हार दिया और फिर कहती हो कि यह किंचित है। भगवती करे जैसे राजरानी होकर सुख भोगकरती हो उसी प्रकार राजमाता होकर सुख भोगकरो॥

राम लक्ष्मण का प्रवेश ॥

दोनों का प्रणाम ॥

राम० माता आज पिताने मुझे प्रजा पालन का भार लेने के लिये अनुमति दी ॥

कौ० बेटा चिरंजीवी हो तुम्हारे चन्द्रमुखसे यह शुभ समाचार सुनने के लिये खड़ी थी। आज भगवती ने हमारी मनोकामना पूरीकी ! तुमको अशीष देती हूं कि महाराजाधिराज होकर अकंटक राजकरो ; तुम्हारी कीर्ति हो; तुम्हारे पालनसे प्रजाजन सुखी रहें। एक कामकरो, (तुम छोटी मा सुमित्रा को यह शुभ समाचार सुनाओ वह आती है; तुमको जाना न पड़ा ॥

सुमित्रा का प्रवेश ॥

दोनों भाइयों का प्रणाम ॥

राम—(सुमित्राको) छोटी मा ! पिता मुझे कल युवराज करेंगे, और आज अधिवास। पिताने मुझको जानकी के साथ संयुत उपोषित रहने केलिये आज्ञादी है ॥

सुमित्रा-बेटे इससुसंवादके सुननेसे मेरे चित्तको इतना आनंद प्राप्त हुआ है! क्या कहूँ, तुम्हारा कल्याण हो। तुम हमारे जैसे प्राण से प्यारे बेटे हो—तुमको देख हमारे प्राणशीतल होते हैं-तैसेही तुम प्रजालोगोंको पुत्र भावसे पालन करके रघुवंशके नामको उजागरकरो। औरभगवती से यहमनोकामना है कितुम चारों भाई एक माताके बेटोंके समान राज्य करो। जाओ अबदोनों भाई स्नान और पूजनपाठ करो॥

(राम लक्ष्मण का प्रस्थान)

कौ०—सुमित्रा बहन्! अब जोजा मंगलाचार करनाहो उसका प्रबंध करो। हमारा चित्त इस समय आनंद मेंमग्न है कुछ नहीं बन पड़ता।

सुमि०-बहन्! इसकी कुछ चिंता नहीं हमसब कर लेंगी (नैपथ्ये- बडी रानी कहांहै बडी रानी कहां है)

कौ०—सुमित्रा मुझे कौन पुकारती है॥

सु०—जान पड़ताहै कि पड़ोसकी स्त्रियां यह शुभसंवाद सुनकर बधाई देने को आई हैं। तुमजाओ उनको बैठाओ और बात चीत करो।

कौ०—चलो, ऐसेकाममेंमनजांय। (दोनों काप्रस्थान)

द्वितीयाङ्क

द्वितीयगर्भाङ्क

(सायंकालिक राजसभा)

(राजा दशरथ सिंहासनोपविष्ट, पश्चात् छत्र धारी का छत्र धारण, दोनों ओर किङ्करियों का चंवर व्यजन, सामने वशिष्ठ जी, सुमन्त, विदूषक, प्रतिहारी आदि उपस्थित)॥

राजा—हे सुमंत!

सुमन्त—(सम्मुख होकर) आज्ञा महाराज।

राजा—नगर वासियों को इस राज्य अभिषेक की वार्त्ता से सूचित किया है?

सुमन्त-हां महाराज, राज पुत्र के अभिषेक की बात सुनतेही प्रजा पुंज को अतिशय करके आनन्द हुआ। सब जनोंने अपने २ गृहद्वारों पर पुष्पों की माला और कदली वृक्ष और पूर्णघट स्थापन करकेअनेक २ भांतिके मंगला चारका प्रारंभ कियाहै। प्रत्येक देवालयमेंनाना प्रकारके अनुष्ठानादिक होतेहैं। नगर मेंजितने

ऊंचे२ मन्दिर, और जितने चतुष्पथ, जितने स्फटिक और जितने बड़े हट्ट और जितने समाधि शाला हैं उन सबों पर नाना वर्णों की ध्वजा पताकाओं के फहराने से अयोध्यापुरी की शोभा आधिक्यता से हो रही है। रात्रिमें अन्धकार निवारण के लिये पुरवासियों ने मार्ग के बीच २ दीप हट्ट और टट्टियां बनाय रक्खी हैं। और प्रति स्टह में आनन्द उत्सवके कोलाहल के विशेष और कुछ सुनाई नहीं देता। मृदंग, वेणु वीणादि यंत्रों सहित नृत्य गीत से नगर परिपूर्ण है। और शोभाके देखने वाले मनुष्यों से राज पथ समाकीर्ण, और बारम्बार जयध्वनियों से राजधानी प्रतिध्वनित हो रही है। जान पड़ता है कि जैसे उत्साहरूप वायु पाकर आनन्द रूप सागर उद्वेलित हो रहा है।

वशिष्ठ--ऐसा तो होनाही चाहिये, कुल पावन रामचन्द्र जीनेशुभ मुहूर्त्तमें जन्म लिया है। उनकी गंभीरता, उदारता, धीरता, शीलता, दयादाक्षिण्य में ऐसा कौन कठोर हृदय है जो विमोहित

नहीय। महाराज अब सूर्य वंशका प्रकृति सूर्य उदय हुआ, जिसकी कीर्त्ति रूप किरणों से रघुकुल के साथही संपूर्ण भारत वर्ष उज्ज्वल हो जायगा, इसमें संदेह नहीं है।

राजा—(सहर्ष) आप सरीखे कुल देवता होने से सब संभव हो सकता है! (सुमंत प्रति) हे सुमंत और क्या २ हुआ है?

सुमंत—महाराजा की आज्ञानुसार समीप वर्त्ती राजों और ज्ञाति कुटुम्ब बन्धु बांधवादि सबोंको निमंत्रण पत्र भेजागया है। राज मार्ग भी झाड़ बुहार कर अतिस्वच्छ करदिया गया है। मणि मंदिर, रत्न मंदिर, स्फटिकावास, हिमगृह, बलि गृह, अमरा पुरी, वसंत पुरी आदि समस्त राज मन्दिर और सब विहारवन सुन्दर मार्जित और सज्जित कियागया है। संपूर्ण राज किंकरों को बहुमौल्य वस्त्रालंकारादिक दियेगये हैं। अनाथ दीन, दुःखी, अन्धे, आतुरआदि प्रार्थक लोग अपनी २ प्रार्थनाओं से अधिक धन प्राप्त करके महाराज की अचल राज्य लक्ष्मीकी वृद्धि मनाते

हैं। अध्यापक, ब्राह्मण, पण्डित, अधिष्ठान होते- ही यथायोग्य समादर पाकर धनद्वारा पूजित होकर आशीर्वाद देते हैं। और एकवर्ष का राजकर नहीं लियाजायगा प्रजा लोग यहसमाचार सुन कर प्रेमपूरित होकर कहते हैं कि, "रामराजके प्रारम्भ मेंही इतना सुख प्राप्त हुआ है, न जा- नियेपीछे कितना सुखहोगा,,

बिदूषक-महाराज जोहमने सुनाहैसोभीसुन लीजिये-

रामाभिषेके मदविह्वलायाः कक्षच्युतो हेमघटस्तरुण्याः।
सोपान मारुह्य चकारशब्दं ठनमृठनमृठः ठठनंठठंठः ॥

अर्थात् रामाभिषेकके समाचार पाकर ज्योंहीं युवतीजन विह्वल हुईं उनके कांखसे सुवर्ण के घट छूटकर सिड्ढ़ियोंपर गिरपड़े तब ऐसा शब्दहुआ किठनं ठनंठः ठठनं ठठंठः अथवाठठंठंठठठं ठठ ठंछः। इसका यह अर्थ है कि जब ढनगते २ घटजलमें जापड़ा तबछः ऐसा शब्द हुआ॥

राजा—(हंसकर) सखे तुमको ऐसा अच्छानदीख पड़ा तोऔर किसको दीखपड़ेगा? औरजो ऐसा वर्णन नकरोगेतो राज बिदूषक काहेकेलिये हो। (सुमंत

को) सुमंत्र! राजअभिषेक की सम्पूर्ण सामिग्री उपस्थित हुई ?

सुमंत्र-हां महाराज। कुल गुरुजी की आज्ञानुसार सब कुछ हुआ है, और, जो कुछ आज्ञा होगी तत्क्षण आ जायगा।

विदूषक—महाराज सबकुछ तो हुआ पर केवल ब्राह्मण भोजनकी चर्चा न आपनेकी न सुमन्तने! औरसब कर्मोंका सारभूत उत्तम कर्मवही है उसे कोई नहीं जानता, दूरहो ऐसे स्थान पर ठहरना उचित नहीं। (क्रोधसे गमनोद्यत)

राजा—(हंसकर) हे विदूषक न जाओ, सुनो ऐसाक्रोध क्यों करते हो ?

विदूषक-क्रोध न करें तो क्याकरें? स्थान बनातेहो, घर बनातेहो, पुण्य दान करते हो, आपस में न्योता करते हो, केवल ब्राह्मण भोजन के समय ढाकर ढोलहोती है! हे हे इसीको राजबुद्धि कहतेहैं! (जनांतिक) जैसा मूर्ख राजा तैसे मन्त्री!

राजा—बैठो२ धैर्य्यरक्खो। तुमतो अपने ही सुखकेकहते हो, ब्राह्मण भोजन सब कर्मोंका सारहै, तब जो

भारकर्म है उसके करने में कुछ अनुमतिकी अ-
पेक्षा होनी चाहिये ? उसका उद्योग तो प्रथमहीं
से होचुका है। कल मध्याह्नको भोजन करने से-
ही प्रयोजन है या कुछ और ?

विदूषक-हां महाराज यही तो होना चाहिये। सोई तो
ऐसा कभी हो सकता है ? परन्तु हमारा यह प्र-
योजनथाकि क्या क्या पदार्थ भोजनके लिये बने
हैं, हम सुन लेते । नहीं जानपड़ातोनहीं सही
इसका प्रबन्ध सुमंत्र करेंगे तो अच्छाही होगा
(पेटपर हाथ फेरकर) अरहो २, दबड़ावोकहीं
किसी प्रकार से आज की रात काटो, फिर कल
तुम्हे कौन पाता है ! कल तुम्हारा पाचकाग्निका
खाण्डव दाह होगा ।

राजा—(वशिष्ठजी से) गुरुदेव मैं निवेदन करता हूं कि
आप सुमंत्रके साथ जाकर देखिये, कौन वस्तुआय
गई और कौन वस्तु शेषरही । हमारी कुलरीति
और शास्त्र की विधि सब आप को विदित है,
इसलिये आप ऐसा प्रबन्ध करिये जिसमें कोई
विधि छूट न जाय ॥

वशिष्ठजी—तथास्तु (वशिष्ठ और सुमंत्रका प्रस्थान)

विदूषक-अहाहा! आफतगई अब मन खोलकर बातकर सकेंगे। महाराज शुक्राचार्य जैसे राजाबलिकेयहां भारीक मनमें पैठकर राजाबलिको दानमें प्रतिबन्धकहुयेथे, वैसेही हमारे आनन्दके समय गुरु पुरोहितके निकटरहने में सब लोगोंको सटपटाना पड़ता है। जो हम मनन करते हैं उसका बिलंब क्यों होता है?

राजा-बताओ तो, सबका प्रबन्धतो होगया, अब तुम्हारे मनकी बात सुननी चाहिये॥

विदूषक-हमारे मनमें और क्या है भोजनकी बातका तो निश्चय होगया और ब्राह्मणोंके लिये दो एक आभरणका प्रबन्धतो सुमन्त्रने कर चुका है। अब तो दिलकी बात आमोदके विशेष और क्या है? आज शुभदिनहै, नगरमें सब किसीने आनन्द और उत्साहकर रक्खा है। क्या राजसभामें नृत्य,गीत राग कुछ न होगा, सो हमने मङ्गला मुखियोंको बुलवाकर बैठाय रक्खा है, महाराज की आज्ञा आवें तो उनको यहां बुलालेवें॥

राजा-(हंसकर) क्या चिन्ता है, तुम आप बुलाने क्यों जाओ? प्रतिहारी को कहदो बुलालावे ॥

विदूषक-नहीं नहीं, हरे २ ऐसी बात होसक्ती है कि उन लोगोंकोनोकर बुलालावें। देखो गंगाजीके बुलाने के लियेभागीरथ आपही चलते हैं।

(गमनोद्यत)

राजा—क्या तुम्हारे पितरों का उद्धार होगा?

विदूषक-हा ऐसाही तो होगा) क्योंकि पिता पांच प्रकारके हैं॥

अन्नदाता भयत्राता यश्चकन्या विवाहिता।
जनिताचोपनीताच पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

अब देखें यदि इनमें से प्रथम पिताका उद्धार करसकें! हा, हा, हा, (प्रस्थान)

राजा—प्रतिहारी?

प्रतिहारी—क्या आज्ञा महाराज!

राजा—तुम वीरेन्द्रसिंह सेनापति से जाकर कहो कि कल प्रत्यूष समय चतुरंगिनी सेना सजकर यहां आजावे, और काम्बोज और बाल्हिक घोड़ोंपर योग्य सवार नियत होवें, और भद्र

मन्द और मगमंद हस्ती कई एक यहां आवें, क्योंकि उपस्थित राजाओं के सम्मुख रहस्य कुछ दिखलाया जायगा ॥

प्रतिहारी-जो आज्ञा महाराज (प्रस्थान) ॥

(विदूषक का प्रवेश)

राजा-कहो वे लोग कहां हैं ?

विदूषक—क्यों महाराज जब तो कहते थे कि हमारा पितृकुल उद्धार होगा, अब आप से विलंब सहा नहीं जाता (नैपथ्य में घुंघरू के शब्दको सुनकर) अहाहा ! (यह छबीलियां सुन्दरियां आती हैं, चलो सम्हल बैठें नहीं वे क्या समझेंगी, (नर्तकीगणों का प्रवेश), (नृत्यगीत का-आरंभ), (विदूषकका वाहवाह देना और भांति२ के भाव बतलाना ॥

राजा-(गीत समाप्ति में) सखे अब इनलोगों को पारितोषिक देकर विदाकरो। रात्रि अधिक गई, सबेरे उठना है, अब शयनागार में जाकर सो रहें (प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क ॥

तृतीय गर्भाङ्क ॥

सीता प्रमोद-बन ॥

(सीता और उर्मिला उपस्थिता)

सीता—नहीं बहुत आडम्बर में प्रयोजन नहीं ॥

उर्मिला-आनन्द करना क्या आडम्बर है?

सीता—आर्य्य पुत्र कहते हैं कि सुख दुःखमें बराबर रहना उचित है ॥

(वासन्ती का प्रवेश)

उर्मिला-क्यों सखी वासन्ती आज आनन्द उत्सव करना उचितत नहीं है?

वासन्ती—अवश्य उचित है। सब घर २ में आनन्द होरहा है केवल हमारेही घरमें नहोगा? बड़ीरानी बहुत सा दान पुण्य कररही हैं, कितने लोगों को खिलाती पिलाती हैं और वस्त्राभूषण देरही हैं!

उर्मिला-मैंभी कोठे के ऊपर से अभी देख आईथी कि नगरमें आनन्द उमलरहा है-रातको अयोध्या

पुरीमें मानों सूर्य्य उदय हुये हैं! सोदेखो तो बहन ऐसे आनन्द के दिनमें सहेलियों को बुलवाकर गाना बजाना नकरें तो कबकरें? पर बहन नहीं चाहती, अब तुम आई हो तुम्हारे कहनेसे यदि मान जावे॥

वासन्ती—क्यों जानकी ऐसे काममें मना क्यों करती हो? उर्मिला तो अच्छा कहती है—आज आनन्द का दिन है अवश्य आनन्द करें॥

सीता-सखी वासन्ती तुम हमको बहुत चाहती हो इसीसे ऐसा कहतीहो। पर सखी अपनी बधाई आपही गाना अच्छा नहीं है, और २ करें तो अच्छा है।

वास—जानकी क्याजाने तुम क्या कहती हो जिसके घरमें पुत्रहोता है, और जिसके घरमें मङ्गलाचार होता है बधाई भी उसीके घरमें गाई जाती है पड़ोसी के घरमें नहीं गाई जाती।

सीता-हां उसके घरमें गाईजाती है पर वह आपनहीं नाचती गाती! राज पुरीमें तो बहुतसा उत्सव होरहा है॥

वास-बात में हम तुमसे नहीं जीतेंगी! पर आनन्द उत्सव होनेसे हमारा चित्त प्रसन्न होता।

उर्मि-यदि हम अपने घरमें सबको बुलवा कर गावें बजावें ?

वासु-अच्छी कही। क्यों जानकी इसमें तो अब अनिच्छा नहीं है?

सीता-(हंसकर) जो हम, सोई उर्मिला-उर्मिला के घरमें और हमारे घरमें होना समान है। पर यदि तुम्हें उत्सव करनाही है तो आज रहने दो, क्योंकि आज एकतो हम उपासी हैं दूसरे रात्रि अधिकबीत गईहै, अब सामान करते करते शेष रातभी वितीत होजायगी। इससे उचित है की कलरात्रिको उत्सव करना।

वास-राजपुत्र के आने का समय हुआ है इस कारण तुमही हजारों बहाना करती हो॥

सीता-सखी यह भी सामान्य कारण नहीं है॥

वास-अच्छा जिसमें तुम सुखी रहो उसमें हमारा भी सुख है॥

उर्मिला-सखी वासन्ती आज सवेरे शीघ्र उठना; तूतो-जानतीही है कि सीताका श्रृंगार रचना का भार केवल हमलोगों परही है तो बहन् जो इसमें देरी होगी तो सभा के सबलोग क्या कहेंगे ॥

वासन्ती—उर्मिला तुम किसीप्रकार की चिन्ता नकरो, सबेरे उठना क्या, कहोतो सारीरात योंहीं बैठीरहें, प्रियसखी पटरानी होगी क्या हम निद्राको नहीं छोड़सकती ? तुमबहन एककामकरो वस्त्र, गहना, कंघी, प्याली, डिबिया, तेल, फुलेल, सब इकट्ठा करके रक्खो और माली से कह दो कि वह कल भोरही जानकी के फुलवारी में जाकर उत्तम २ सुगन्धित पुष्प जो कुछ मिलें चुनलावे कि हम तुमसे प्रथमही आकर नवीन रानीका श्रृंगार ऐसा सजदूं कि जिसको एकबार देखतेही नवीन राजा मोहित होजावे ॥

उर्मिला—अली क्या मोहित होना, अभी बाकी है ?

वासन्ती—वोतो पुराना भाव है, इस समय नवीनभाव

चाहिये ! पुरुष को बाह्य कामों को अधिकता
से घर में मन नहीं ठहरता है, इसलिये कहती
हूं कि शृंगार भली भांति से होना चाहिये ॥

सीता—प्रियसखी ! यह तुम्हारी भूल है क्या शृंगार के
करने से मन ठहरता है ?

वासन्ती—तब क्या केवल रूपमें ?

सीता—सोभी नहीं ! मन मन से ठहरता है, और गुण
से बाधा जाता है ॥

वासन्ती—तब यह जानपड़ता है कि युवराज का मन
बंधा है, हिलचल नहीं सक्ता ॥

सीता—हमको ऐसाही विश्वास है ॥

उर्मिला—यह बात ठीक है ॥

वासन्ती—किंतु जानकी पुरुष पर इतना विश्वास
भला नहीं ॥

सीता—सखी विश्वासी जनका विश्वास न करना भी
ता अधर्म है ॥

वासन्ती—सो भले, विश्वास करो, परन्तु सर्वस्व दे-
कर विश्वास करने में कुछ सुख देखतेही न
रह जाना पड़े ॥

सीता-जिस दिवस धनुष तोड़ा है उसी दिन सर्वस्व दे-
कर निश्चिन्त होचुकी हूं। अब क्या देना बाकी
रहा है?

वासन्ती—अच्छी बात तुमने कही, हमारी अनेक दिनसे
इच्छा थी, तुम्हारे मुखसे राजपुत्र के धनुष
तोड़ने की कहानी सुनूंगी। किस प्रकार की
सभाथी? और किस प्रकारसे धनुष टूटा?और
तुम्हारे मनमें उस समय कैसी भावना थी?
सो बहन् वह सब बात हमारे सामने कहो,
आज उत्सव का दिन है, यह बात तुम्हारे
मुखसे जैसी आज शोभा देगी वैसी
फिर नहीं॥

सीता—सखी वासन्ती, आजपर क्याहै यह बात तुमह-
मसेजब पूछोगी तब हमको भली जानपड़ेगी॥

वासन्ती—तब बहन् कहो॥

सीता—सखी उस सभा में जिस जिस देशके राजा
थे सोती हमको नहीं विदित है, सभा में अनेक
लोग आते जाते थे और राज मंच प्रति दिन
भर जाते थे, इतनाही हमने देखा। परन्तु आ-

रोखेसे कई दिन तांई सभा देखतीथी वा अपार समुद्र देखती थी यह नहीं जान पड़ता था ॥

वासन्ती—क्यों जानकी ॥

सीता—क्या सखी यह भी कहना पड़ेगा, तुमको नहीं जानपडा, हमारे हृदय सिंहासनमें राजा कहने के लिये राज सभामें ऐसा कोई राजा वा राज पुत्र नहीं दीख पडा तो फिर वह सभा अपार समुद्र के समान है। तब क्याकरूं मैं अपने चित्तमें बिपत्ति भंजन मधुसूदनके चरणारविंद का ध्यान करने लगी ॥

वासन्ती—तिस पीछे ॥

सीता--तिस पीछे सखी एक दिनमेरी बांई आंख फड़की, विचार किया कि इतने दिन पीछे निर्दय विधाता दया करेंगे। उस समय कुचित होकर गवाक्ष से सभाकी ओर देखा ॥

कैसे; नव दूर्वादल, तनरुचिकोमल, चंचलनयनविशाल।
मणिकुण्डल मण्डित, गण्डविभूषित, रंजितअधररसाल॥
नीलपंकजगंजन, विदलितअंजन, अभिनवकिशोरलावण्य।

कैसे, हास्य सुधावत्, हेलत खेलत, मेहजनु चपल शरव्य ॥
कैसे, कुन्तलकुंचित, अविरलकम्पित, भ्रूचापभुवनअतुल्य ।
बाहु, अजानुलंबित, श्यामलनिंदित, करतलकमल प्रफुल्य ॥
कैसे, कंबुरेखान्वित, ग्रीवासुललित, चन्दनचर्चित वक्ष ।
धनु तूणसमन्वित, पृष्ठेलंबित, शंकित जनुरिपुपक्ष ॥

कैसे, मृगेंद्रलाञ्छित, अनंगवाञ्छित, सुन्दर तनुकटिभाग ।
जनु रक्तशतदल, उज्ज्वलकोमल, निर्मलपदतलराग ॥

सखीरी, उसीदिन उसीसभामें आर्यपुत्रको अनुपम रूप लावण्य कमनीय कांतिप्रशान्ति मूर्त्ति देखा तो हमारे चित्त पटमें रूप चित्रित होकर जन्म भर के लिये लिखगया है। मैं देखतेही मोहित होगई; जो हमारे बिवाह का धनुभंग रूपदारुण प्रण था सो विस्मृत होकर उसी समय एकाएकी चित्त में प्रियतम के कंठमें जयमाल डालकर पतित्व वर्णन किया ! तिसपीछे हमारे पिता जब उच्चस्वर से कहनेलगे कि देशदेशांतर और द्वीप द्वीपांतर से इन्द्र चन्द्र सूर्यके समान इतने राजा

और राजपुत्र शूरवीर इससभा में आये हैं, परन्तु हमारे अभाग्य से इस धनुष के तोड़ने की सामर्थ्य किसी में नहीं है-किसी से टंकार देना वा धनुष को चढ़ाना न बन पड़ा! भला यह तो क्या किसीसे धनुष उठाया भी नहीं गया! इसलिये हमको निश्चय हुआ कि पृथ्वी निर्वीर्य्य होगई ॥

बासन्ती-सच कहती है! क्या लज्जा की बात है! जो इनमें धनुर्भंग करने की सामर्थ्य न थी तो इस सभामें स्त्रियों के समान किसलिये आये? सखी आगेकहो ॥

सीता—जब हमको ज्ञानहुवा तब हम व्याकुल हुई और अपने कठिन प्रणको स्मरण करके विचारने लगी कि ऐसा प्रण काहेको किया! और हायहाय करके कहनेलगी हे बिधाता! हमको मन वाञ्छित धन देके क्या निराश करेगा? हे कुल देवी! दयाकरके हमारे प्रियतमको ऐसी सामर्थ्य दो जिस्से धनुर्भंगरूप प्रणमें जयीहोकर हमारा दुःख दूरकरें! हे सखी उस समय पिताने फिर

कहा कि सुर, असुर, नाग, नर, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, जो कोई जाति वा कोई कुल हो इस हरधनुष को तोड़ेगा उसी के संग सीताका विवाह करूंगा।

वासन्ती-हा भगवान्! जो कोई चंडाल वा राक्षस आकर इस धनुष को तोड़डालता तो तुम्हारी क्या दशा होती?

सीता—सखी जब पिताके मुखसे यह बात मैंने सुनी उस समय हमको भी ऐसाही भयहोकर अचेतन्यता हुई और मूर्छा आगई। सो हमको नहीं जानपड़ा कि वह मूर्छा कितनी देरतक रही; सखियोंने जब मुझे सचेत करके बैठाला तब आर्यपुत्र मानो मेरेमनका क्लेश जानकर सभा से उठकर धनुष की ओर गये। तब उस समय उनकी मधुर मनोहर कोमल मूर्त्तिको देखकर मेरे मनमें फिर यहभयहुआ,कि इन कोमलाकार कमल से यह कालरूप दुर्जय धनुष क्योंकर टूटसकेगा, यह कहतेही क्या देखती हूं कि प्राणनाथके वाम हस्त में वही प्रचंड धनुष बिनाश्रम

उठ आया—उसीके साथ मेरी आशा भी प्रबल होगई-जैसेही धनुष को नवाया तैसेही हमारे भय का मुख भी नमगया—और वीरता के साथ हमारा गुप्त प्रेम भी प्रकाशित होगया। और धनुराकर्षण के साथही हमारा मन और प्राण आकर्षित होगया और धनुष के भंग होतेही हमारे मनके सन्देह और क्लेशभंग होगये।

उर्मिला-(चकित होकर) जानकी कोई आता है! मुझको पैर की आहट जानपड़ती है।

बासन्ती-और कौन आवेगा! जिसने महादेव का धनुष तोड़कर यह अमोल्य रत्न सागरसे निकाला है वही इसको हृदय में धारण करने आतेहोंगे।

उर्मिला-तो चलो सखी घरसे निकल चलें।

(उर्मिला और बासन्ती का प्रस्थन)

(रामचन्द्र का प्रवेश)

राम—(हंसकर) प्यारी किसकी चर्चा होती थी।

सीता—(लज्जासहित) जिसकी बातसे हमारा चित्त प्रसन्न होता है।

राम—उनकी कोनसी वार्ता है.?

सीता—जो वार्त्ता अहर्निश हमारे चित्तमें बसी रहती है,

राम—जो चित्तमें बसे वह क्या मुखमें नहीं आसक्ती है?

सीता—सबके सामने नहीं आती है।

राम—तब क्या सबके मध्यमें हमभी गण्य हैं?

सीता—(हंसकर) नहीं आर्य पुत्र तुम सबके मध्यमें नहीं, तुम सबके अग्रगण्य हो।

राम—अच्छा, जिसबातको तुम कहनेमें संकोच करती होतो उसके सुननेके लिये फिर हमारी अत्यन्त इच्छाभी होतो भी हम न सुनेंगे।

सीता—हे प्राण वल्लभ! आपसे कौन बात कहनेमें संकोच है? क्याकरें स्त्रियोंको लज्जाही मित्र और लज्जाही शत्रु है। आपकी इच्छा जिसवार्त्ताके सुननेपर हो उसके कहनेमें लज्जा क्या रोक सक्ती है? (कुछ मौन होकर) और कोई बाततो नहीं होती थी, प्रियसखी बासंतीको धनुर्भङ्गके वृत्तान्त सुननेको बहुत दिनसे इच्छाथी सोई आज कहती थी।

राम—(हंसकर) प्रिये, प्रत्येक सखी क्या प्रति दिन वही वार्त्ता तुमसे सुननेकी इच्छा रखती हैं? तुम वही वार्त्ता प्रतिदिन कहती हो।

सीता—आर्य पुत्र, अन्तमें क्या अरुचि होतीहै।

राम—घरमें आकर जब हमने तुम सबको फुलवाड़ी में देखातो विचाराकि कल सिंहासनपर बैठनेके समय कौन २ वस्त्राभूषण धारण करनेकी वान्छा होती होगी।

सीता—यह कोईबातहै? वस्त्राभूषणका क्या विचार? जिसकेहृदयमें नील कांतिमणि सदैव बिराजमान है उसके शृंगार का और कौन प्रयोजन है।

राम—तुमनेजो चन्द्रवंशमें जन्म लिया है सो तुम्हारी बातोंसे प्रकाशित होताहै। कारणयहहैकि सुधाकर जिसके पुरखानहो तो उसकी प्रतिवाक्य में इतनी सुधा कैसे निकलेगी?

सीता--आर्य पुत्र, कलक्या निश्चयहमको सभामें जाना पड़ेगा। इतने लोगोंमें, विशेष करके गुरुजनों के सम्मुख तुम्हारे बामभागमें कैसे बैठूंगी।

राम—(हंसकर) कुलरीतानुसार यह तो करनाही पड़ेगा। और हमाराजो दुर्वह राज्यभार है इसका भारभी तुमको उठाना होगा।

सीता--हमस्त्री हैं! भला हम राज काज क्या समझेंगी और क्या करेंगी।

राम--प्रिये तुम्ही सब करोगी-हमतो केवल नाम मात्र को रहेंगे। हमारा बुद्धिबल सब तुम्हीं हो। चलो अब शयन मन्दिर में चलकर तुम्हारा मुख चन्द्र-मा देखकर नयन चकोरको तृप्रकरें (प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क॥

प्रथम गर्भाङ्क॥

कैकेई का शयनागार॥

कैकेईके शयनकरते हुये मंथराका प्रवेश॥

मंथरा—देवी कैकेई। तुम निश्चिन्तहोके सोरहीहो? क्या तुमको उधरके समाचार विदित नहीं हैं?

कैकेई—(उठकर) क्यों मंथरा क्या हुआ! तेरा मुख देख मेरा चित्त व्याकुल होगया! सत्य कहो नन्दिग्रामसे कुछ अशुभ समाचार तो नहीं आये हैं? भरततो अच्छे हैं॥

मंथरा--बलैय्या लेऊं! भरतको तौ सदैव कुशलहै!

कैकेई—क्या शत्रुघ्न—

मंथरा—तुम्हारा सिर! जो नहींहै सोही शोचती है; घरमें क्या क्या होताहै उसकी कुछ खबर नहीं! भली स्त्री हो! तुम केवल खाना और सोवना जानती हो! तुमको अपने भले बुरेका भी ज्ञान नहीं है!

कैकेई—तुमको हमारे सिर की किरिया! सत्य सत्य प्रकाश करके कहो क्या हुआ है।

मंथरा—और क्या होनाचाहिये? कौशल्या का बेटा कल राजा होगा उसका उद्यम होरहा है और क्या होगा॥

कैकेई—सोई कहो! अब धीरजहुआ! हमारे प्राण एकबेर तो उड़गये थे! तुझे धन्य है, ऐसे शुभ समाचार का इसप्रकार से कहना? (कंठकाहार उतार ते हुये) तैंने ऐसा शुभसमाचार सुनाया तुझे और क्या देऊंगी! स्मरण के लिये यहहार देती हूं (हार का देना)

मंथरा—(क्रोध से कांपती हुई हारको फेंक कर) हाय इतनी बड़ी हुई आज काल में बेटे के भी बेटा होगा गंभीर बुद्धि आजतक न हुई? अभी तक

संकेत में बातको नहीं समझती हैं ? आजतक सूधी के विशेष टेढ़ी नहीं समझती है ? मैंका कहूं, कहांजाऊं, तुझेधिक्कार है ! मैंने जन्मसे तुझे जो कुछ सिखाया बुझाया सब व्यर्थहुआ ! तुम्हारे गवने के समय तुम्हारी माताने हमारा हाथ तुम को सौंपा अब हम उनको क्या कहकर मुंहदिखलावेंगी ? अपनी बेटी की जो निकम्मी बुद्धि है सो तो वह नहीं समझेगी, वह केवल मुझकोकहेगी, कि अरीमंथरा तू किसलिये इसके साथ रही तब मैं उसका क्या उत्तरदूंगी मैं तो उसके बदले राजाकी दुलहिन तो नहीं बनसकती जो राजा को अपने वसकरलूं ? मेरी जितनी सामर्थ्य थी उतनी की आगे उसकी बेटी सुधार न सके तो हमारा क्या दोष है ? हे धर्म तुमसाक्षी हो, मैं भलाई के विशेष बुराई को नहीं चाहती हूं !

कैकेई—क्योंरी मंथरा हमने क्या किया ! और हमको क्या करना उचित है खोलकर क्योंनहींकहती !

मंथरा—क्याहुआ है नहीं समझसकतीहो ! और क्या करनाहोगा सोभी नहीं जानती हो ! कहा है,

फूलहि फलहि न बेत यदपि सुधा वर्षहि जलद।
मूरख हृदय न चेत जो गुरुमिलहि बिरंचि शत।

वही दशा हमारी हुई कि तुम्हारी अज्ञान बुद्धि को समझा देतीहूं। भला सुनो तो सही राम के राजा होने की वार्त्तासे तेरे चित्तको आनन्द हुआ!

कैकेई—हां बहुत सा आनन्द हुआ।

थरा—तुम्हारा सिर। तुमको इतना ज्ञाननहीं है जो रामराजा होंगे तो तुम्हारी रानसी सौत कौशल्या राजा की माता बनकर सर्वकार्य्य की करनेवाली होजायगी। जोमनमानेगासोकरेगी, जिसको जो देगीसो पावेगी, जिसको न देगीवह नपावेगी, तब तुम उसके हाथका दियाहुआ उठाया धरा खाकर केवल अपनेमनहीमन जलाकरोगी। उसका ऐश्वर्य्य देखकर भवचकरहा करोगी। सौत के हाथको सर्पफनके सदृश जानना. जो वह मिठाईदे तो भी उठारखना चाहिये और उसकी बोलीको पिशाचकी बोलीकेसमान तीनबेर थूप थूकना चाहिये। अब तू समझी?

(कैकेई को अवाक और चिन्तायुक्त देखकर)

हये हये ! ऐसा मूढ़ और निर्बुद्धि तो ब्रह्माण्ड भरमें न होगा। कैकेई चाहे और बात तुम समझो वा न समझो इतना तो जानो कि मंथरा जो कुछ कहती है सो अपनी बहू बेटी के लिये नहीं कहती, केवल तुम्हारी भलाईके लिये प्राण देती है, तुम्हारे सुखमें उसे सुख और तुम्हारे दुखसे दुखी ! तुम राजाकी मीठी २ बातोंमें भूली हो, तुमको ऐसा ज्ञान होता है कि राजा सब रानियोंसे हम को प्यार करते हैं. हमीं राजाकी सुहागिन रानी हैं; तुम ऐसाही शोचकर मनमें फूलकर धरती पर पाव नहीं धरती हो। राजा केवल तुमको ऊपरी मनसे प्यारकरतेहैं, यह तुम्हारी समझमें नहीं आताहै, सोहा भलाई करनेवाले लोग जैसे राजाको धार्मिक धार्मिक कहते हैं वही तुमभी जान रही हो, पर हमको भलीभांत निश्चयहै कि राजाके समान पृथ्वी भरमें कोई धूर्त्त और कपटी नहीं जैसा कहा है। मन मलीन तन सुन्दर कैसे। विष रसभरा कनक घट जैसे ॥ फिर-बोलैं बचन मधुर

जिमि मोरा। चाहिं सदा अहि हृदयकठोरा ।।
इसके प्रमाण देखो, तुमको मुखसे बड़ाकरकहते हैं और कौशल्या को काममें बड़ाई देतेहैं। तु-मको मनसे प्यारकरतेतो भरतको छोड़कर राम को राजा क्यों करते? यदि भरतको निश्छल राजा करना चाहतेतो अपनी ननिहालमें क्यों भेजते और उसी अवसरमें शीघ्रताकरके रामको राजा करनेका उद्योग क्यों करते, बड़ी लज्जाकी बातहै कि तुम राजपुत्री और राजरानी हो, राजचातुरी कुछ नहीं समझती हो। जाने दो तुम्हारी समझ में नहीं आया तो नहीं पर हमतो बच्ची नहीं हैं हमारा तीन पन बीत गया चौथापन जाता है, कहावत है कि सात लड़की एक बूढ़ी, खाली गालबजाने से कामनहीं होता है, सब कामों में आदि अन्त दोनों का विचार करना चाहिये। इस समय हमारी सीख न मानोगी तो अन्तमें अत्यन्त दुःख भो-गोगी।।

प्रथमहिं यौवन के बलहि जान्यों नाहीं काऊ।
पर अब तुमका सूझि है अरु फिर २ पछिताऊ।

अभी यत्न करो जिससे शत्रु न उपजे (चारों ओर देख भाल कर और काना फूसी करके भरत राजा हों राम न हों) हम भली भांति देखती हैं जो राम को राज्य हुआ तो भरत को देश निकाला करेंगे वा किसी छल छिद्र से मार डालें लक्ष्मण तो रामके बड़े आधीन हैं और सुमित्रा भी कौशल्या की बड़ी प्यारी सौत है इससे इनको तो कुछ भय नहीं है जितनी बिपत्ति है सो सब हमारे तुम्हारे और भरत के लिये है। इसलिये कहती हूं कि अभी उसका यत्न करो नहीं तो कल कुछ बनाये न बन पड़ेगा॥

कैकेई-मंथरा तू हमारी यथार्थ भलाई चाहने वाली है, तेरी बातोंसे मुझे अवज्ञान उपजा है। परंतु महाराज अपने प्राणकेसदृश रामचन्द्र को प्यार करते हैं उसे छोड़ किसलिये भरत को राजा करेंगे॥

मंथरा-हां अब सूझी! कैकेई तूने मुझे ऐसा समझा जो इसका उपाय बिना बिचारे मैं तुमसे

कहने आई ! इसकी कुछ चिंता न कर परन्तु मैं जो मंत्र तुमको बताये देतीहूं उसका भलीभांति साधन कर सकोगी, तो (कानके समीप फुसफुसा कर) राम कदाचित् राजा न होंगे भरतही राजा होंगे ॥

कैकेई—हमको तो कुछ स्मरण नहीं है ॥

मंथरा—हा कपालफूटे ! तुम्हारीही समझमें आतातो तुम्हारी यह दशा क्यों होती । तुमको स्मरण नहीं है, एक समय महाराज ने तुमपर संतुष्ट होकर दो बरदान का देना अंगीकार कियाथा; सो उस समय तुमने हमारी शिक्षा से कहा था कि महाराज ये दोनों बर जब हम चाहेंगी तब लेलेंगी, तब राजाने उसको मानलिया था। यह बात तुम्हें स्मरण है ?

कैकेई—(कुछ चिन्ता करके हर्षसहित) हांहां ठीकहै ।

मंथरा—धीरजधरो, कूदो फांदो नहीं, जो हम कहें उसको धीरजसे सुनो, तबतो काम सिद्धहोगा ॥

कैकेई—अच्छा कहो ॥

मंथरा—तुम आज राजासे दोनों बर मांगो । उसमें

से एक तो (फुसफुसा कर) भरत को राजा करना और दूसरा यह कि रामचन्द्र को चौदह वर्ष के लिये बनबास देना ॥

कैकेई—क्यों मंथरा ! पीछे वाले कठोर बर का क्या प्रयोजन है ॥

मंथरा—क्या प्रयोजन है ? हा मन्द भागिनी ! तुम्हें कुछ बुद्धि नहीं ! तुम यह भी नहीं समझ सकी जो राम यहीं प्रजालोगों के सामने बने रहेंगे तो वे भरत के राज्याभिषेक के समय कुछ गडबड करेंगे, इसलिये कहती हूं कि राम के बन में चले जाने से भरथ अकंटक राज्य करेंगे। जब चौदह वर्ष भरत राज्य करके प्रजालोगों को बशीभूत करलेंगे तब १४ वर्ष पीछे जब राम आवें तो चाहे उन्हें राज्य में घुसने भी न देवें। इसलिये कहती हूं कि जिस समय तुम भरत को राजा करने को मांगो, साथही दूसरा बरभी मांगलो। यदि दूसरा बर न मिले तो इस बर का मांगना न मांगना बराबर है ॥

कैकेई—मंथरा ! तेरे समान बुद्धिमान न कोई हुआ न

होगा। अब तूने भलीभांति समझाया, दोनों बर लेनेही होंगे।

मंथरा—लेनाहोगा कहने से कुछ न होगा-यह महा कठिन काम है। क्या जाने बहुतदिन की बात है राजा दोनोंबर का देना अङ्गीकार करेंवा न करें-आगे बांधो पाठ, पीछे हेरोबाट-इसका भी ऐसा उपाय करना चाहिये जिस्से बरदेही दें। इसका उपाय सब प्रकारसे पक्का करना चाहिये। तब एककाम करो कि जोतुम गहना पहरे हो उसे खोल के फेंक दो और बालों को खोल खसोट पृथ्वीपर सोओ और आंखों में लाल मिरचा लगाकर रोयाकरो। जब महाराजआवें तो थोड़ी देरतक न बोलो। उस समय राजा निस्संदेह मनावेंगे और क्षोभित होंगे और तुमको अवश्य धरती से हाथ पकड़ उठावेंगे और आंसू पोछकर पूछेंगे, तुम काहेको रोती हो, तबतुम बोलना जो महाराज आपने दोनों बर देने का बचन किया था, आज हमको सोई दोनो बर दो। जो हम मांगेंगी उसके देनेका

बचन दीजिये तो हम मांगें। तिस पीछे जैसेही राजादेना अंगीकार करें तैसेही उन्हीं दोनों बरों को अच्छे प्रबधके साथ मागलेना। क्यों स्मरण है कि नहीं ?

कैकेई—मंथरा, यह मैं कभी नहीं भूलूंगी।

मंथरा—आओ, तुम्हारा गहना अहना खोलदें (अलंकार और बालो का खोलना, आखोंमे सिरचा लगादेना और कैकेई का पृथ्वीपर सोना) हां इसी भांति लेटरहो, थोडासा गाओभी, मैं दूरसे द्वार की ओर तकती हूं ज्योंही राजा आवेंगे त्योंही में छिपकर चली जाऊंगी। जानपडता है कि वे आतेहोंगे। देखा जो जोमैंने कहा है उसे भूलो मत(जलदीमें तुरन्त परदेकी ओटमें होजाना)॥

(राजा का प्रवेश)

राजा—(स्वगत) यह क्या! रानी इसभांति क्यों पडी है? प्यारी को कुछ दुःख तो नहीं पडा? नहीं, ये तो चारों ओर आभूषण बिखरे हुये हैं, यह तो ठीक मानके लक्षण हैं। फिर यह भी देखते

हैं कि रोते २ छाती भी धड़करही है, और आंखों से आंसू के प्रवाह से वस्त्र भीगरहा है ! जो कैकेई सदैव सहास्य वदन और क्षणमात्र भी अप्रसन्न नहीं दीखपड़ती थी सो कैकेई ने एका एकी अपने शरीर को दुःख सागरमें डुबोदिया ! इसका कोई अवश्य गूढ़कारण है ! ओहो सोहो समीप जाकर यत्न तो करें, यदि उसको किसी भांति से प्रसन्न करसकें ! (बढ़कर हाथ पकड़ना और कैकेई का हाथ झिटकना) (प्रकाश्य) प्राण प्रिया आज अकस्मात् ये क्या दूर्दैव है ! कि हृदया काश का चन्द्रमा भूतलमें कैसे आया ? सहकार तरु जब समीप है तब क्या माधवी लता भूमि पर गिरेगी ? सूर्यके उदय होने से क्या पद्मिनी प्रफुल्लित न होगी ? प्रियतमा ! आजयह विपरीत भाव क्यों है ? तुम्हारे मुखरूप शशि को मान रूपराहुने जो ग्रासकिया है इससे हमारे नयन चकोर जो व्याकुल हैं सो क्या तुमको नहीं जानपड़ता है ? तुम्हारा जो कोमलहृदय हैं सो क्या आज एकाएकी पाषाण होगया ? (फिरहाथ

पकड़ कर) प्रिये। फिर काहेको इतना दुःख देरही हो? उठो तुम्हें इतना शोच दुःख किस कारण हुआ है? हमसे कहो, तुमसे किसीने कुछ कहा है? किसीने तुम्हारी बुराई करी है; इतना किसका साहस हुआ जो तुमसे कुछ बुरा कहा? तुम्हारी कोपरूप अग्निको जलाकर कौन अभागेने जलती आगमें हाथ डाला! तुम हमारी राजलक्ष्मी हो, तुम हमारे प्राणसे अधिक प्यारी हो, वह क्या यह नहीं जानता? तुम्हारे लिये हम सब राज्य और प्राण भी त्यागकर सकते हैं, क्या उस मूढ़ को इसका लेशमात्र ज्ञान नहीं है? तुम्हारे नयन जलको बहाकर वह अभी जीता है? यही आश्चर्य है। प्रिये! दुःख को दूरकरो, प्रसन्न चित्त रहो, हमारे साथ बोलो और अपने हृदय की कहो (हस्त धारण पूर्वक उठाना)॥

कैकेई—(उठकर) महाराज! किसीने हमारा अपमान नहीं किया, हम अपने हृदय के दुःखसे आपही रोती हैं, तुमसे कहने से हमें क्या लाभ है?

हमारा ऐसा भाग्य कहां है जो आप हमारी मनोकामना पूरी करेंगे!

राजा—प्रिये! यदि स्वर्ग मर्त्य पाताल में जाकर केकेई का प्रियसाधन करसकूं, यदि इन्द्र चन्द्र वा सूर्यके साथ विवाद कर प्राणेश्वरी कैकेई की कामना पूर्णकरसकूं तो दशरथ इसकाममें उपस्थितहै! तुम अपनी हृदय वेदना का कारण कहो हम तुम्हारे सामने प्रतिज्ञा करकहते हैं जो तुम कहोगी सो हमकरेंगे। कदाचितृअन्यथा नहोगा।

कैकेई—(अधोमुख होकर पांवकी अंगुली सेमट्टीखोदती हुई) महाराज! जो मुझ दासी पर इतनी कृपा की तो हमारी यह प्रार्थना है, कि बहुत दिन हुये आपने मुझे दो बर देने का बचन कियाथा, आज सोई दो बर दीजिये।

राजा—प्रिये, यह बर क्या बात है! तुमजब जो मांगोगी वही तुम्हें मिलेगा! उसका तो देनाहमने प्रथमही अङ्गीकार किया है, सो तो हमदेवेंगे। कहो क्या बर चाहतीहो? हम अभी पूरा करें!

कैकेई—महाराज! एक बरमें तो भरत को राजा को-

लिये (राजाकंपित) और दूसरे में राम चंद्र को चौदह वर्षका बनबास दीजिये, यही वर मागतीहूं।

राजा—हाराम। क्या सुना (पतित और मूर्छित)

मंथरा—(प्रकाश होकर) कैकेई तुझे धिक्कार है। मुख बाये खड़ीश्क्या देखती हो? राजा के मुख पर पानी छिड़को; आज राजा की भलाई बुराई होय तो कल भरतको राजा कौन करैगा? यह लो, जललो (कैकेइ का राजाकेमुखपर जलछिड़कना और राजा का चैतन्य होना और मंथरा का फिर छिपना)

राजा—हाय यह क्या। हम कहा हैं? मेरारामकहां? यह तो वही घर है। यह तो वही पापिष्ठ है! अरी पापीयसी तैंने हमारी मूर्छा को भग क्यों किया? (छाती में हाथ स रक्खे) अरे प्राण। तू अब तक हमारे शरीरम है? (आंखों पर हाथ लगा कर) रे नयन। तू तो निद्रा मेंथा अब क्यों इस दुष्टिनीके मुख देखन को जागउठा? हाय! हमने क्या सुना, हमकहां जांय? हाय! हमारे ललाटमें

क्या यही लिखा था ? क्या हमने राज महिषी जानकर काल सर्प पाला है ? हमारे प्रणय रूप बनमें कल्प तरुकी भ्रांतिसे क्या विषका वृक्ष जमाया है ? इतने दिनों सेदेव कन्या जान कराला-लभी का आश्रय कररहे हैं ? हम रटह लक्ष्मी बिचार कर अलक्ष्मी को पूजते हैं ? हाय हाय ! हमारी सुख रूप नौका आज डूबगई ! हमारा आशा रूप तरु निर्मूल होगया ! हमारा उत्साह रूपस्रोता सूखगया, अरे दुर्विनीते, अरे अनार्य्ये, रे पापचारणी कुल कलंकिनी कैकेई ! तेरे हृदयमें क्या यही गूढ बिचार था ? रामने तेरा ऐसा क्या अपराध किया है ? राम हमारे सूर्यवंश का शिरोमणि, राम हमारे वृद्ध अवस्था का आश्रय, राम हमारे सर्व गुणाकर, सर्वगुणाधार, सत्यका आदर्श, दयाकासोता, राम तुझको अपनी माता के समान भक्ति करते हैं, तेरा कैसा हृदय है जो ऐसे रामको कठिन बनबास देना चाहती है ? तू किसकी मंत्रणासे ऐसे धर्मिष्ठ पुत्रके अहितकी चिंता को अपने हृदय में स्थान देती है ? तूकिस

प्रकारसे ऐसी बात मुखपर लाई? तू ऐसी अमृत भाषिणी होकर इतना विष उगल दिया? तूने किसके समीप व्याध की वृत्ति सीख कर मधुर भाषा रूप मुरली धुनि से मृगके समान मुझको सत्य पाशमें बांध लिया (स्वागत) क्या हमने वास्तव में सत्य २ वचनदियाहै? नहीं ऐसा नहोगा।

कैकेई--राजा लाग आपको सत्यवादी, स्थिर प्रतिज्ञा और धर्म्मिष्ठ जानते हैं ता अब क्योंछोटे मनुष्य कीनाईं वचन देकर सत्य भंगकरनेको उद्यतहो?

राजा—अरे निर्लज्जे, निर्घृणे, धर्म्म द्वेषिणि कैकेई, तू हमारी धर्म्म पत्नी होकर इसी प्रकार धर्मकी रक्षा करती है? तू राज महिषी होकर लोभके वशी भूत होगई। और क्या राज लोभ से पुत्र रत्न रामचन्द्रकामोह नकिया? हाय! जिसराम-चन्द्र के गुणानुवाद बिना समस्त राज्यके स्त्रीपुरुष जल पान नहीं करते हैं, तिस जीवन सर्वस्वपुत्र रामचन्द्र को कौन अपराध से बनमें भेजेंगे? सब राजा प्रजा लोग हमसे रामकीवार्त्ता पूछेंगे तो हम उनको क्या उत्तर देंगे? हम क्या यह

कहेंगे कि अपनी प्राण प्यारी कैकेई के मन संतुष्ट करने के लिये रामचन्द्रको बन वासदिया? हाय क्या अपकीर्ति चिरकाल के लिये कलंक और रम्ती जित अपवाद! हाय! हमें स्वप्न में भी विदित नहीं था जो चिरकाल राजधर्म और मनुज धर्म पालन कर और चिरकाल सत्कीर्तिके मार्गमें चल कर अन्त दशा में यह अधर्म्म और दारुण मनस्ताप मिलेगा! हा! अदृष्टजन्म से अनुकूल होकर अब वृद्धावस्था में प्रतिकूल होगया? रे दुर्म्मति कैकेई! तुझे क्या और कोई बर ढूंढन से नहीं मिला? अब हम कातर होकर बिनती करते हैं; तू केवल राज्य लेकर निरस्त होजा, रामचन्द्र को बनबास देनेका हठ छोड़दे। कैकेई! यह निश्चय जानो, मैं इस सम्पूर्ण राज्यको तृणके समान और अपने प्राणको नखाग्र के सदृश त्यागकर सकूं, परन्तु रामचन्द्रको कदाचित् परित्यागनहीं करसकूंगा। हमें रामचन्द्रके मुखचन्द्र के विशेष सारे संसार में शोभित पदार्थ नहींदेखपड़ता। चाहे भूमिबिना तरुलता सस्य और जीवमात्र रहसके और चाहे

जल बिना जलचर जीसके, परन्तु रामकेदर्शन बिना दशरथ का शरीर कदाचित् सजीवनहीं रह सकताहै। इसलियेहे सुंदरी, हे देवि, हेप्राणप्रिये, मैं हाथजोड़ रोकर तेरे चरणा में यही भिक्षा मागता हूं कि तू अनर्थ कारिणी पाप बुद्धि को परित्याग कर। इसके विशेष जो कुछ तू चाहेगी हमदेंगे, यह प्रतिज्ञा हम करते हैं।

(मंथरा का राजाके पीछे होकर कैकेई को अंगुली संकेत प्रदर्शन)

कैकेई—महाराज! क्या आपका यही धर्म है! और ऐसाही सत्यवाद है! और सूर्य वंश होकर ऐसाही प्रतिज्ञा पालन करतेहो! रामके लिये तुम इतने कातर काहे होते हो? राम अब योग्यहुआ है, अस्त्र शस्त्र विद्या सीखगया है, तो उसको अब बनवास होने में कौनडर है! उसने विश्वामित्रजी के साथ जाकर बनमें कितने राक्षस राक्षसी मारडाले होंगे, जनकपुरमें जाकर शिवजीका ऐसा कठोर धनुष तोड़ कर कैसी

सुन्दरी कन्या के साथ बिवाह किया है, तो क्या उसका बनमें जाना नईबात है ! महाराज ! मिथ्या स्नेहमें और कपट रूप माया में अपना बचन भंगकर धर्म्म नष्ट करना चाहते हो ?

राजा—अरे कुलनाशिनी राक्षसी ! अरे पुत्र द्वेपिणी स्वामि घातिनी चाण्डालिनी ! क्या तूने दयामया को एकाएकी छोड़दिया। तुझको स्वामी हत्या का भी भयनहीं है ! हमारे मरने और प्राणप्रियपुत्र रामचन्द्र के बनवास होनेमेंही तेरी मनोकामना पूरीहोगी ? हा पापिष्ठे, तूने क्या किया ! हे मात बसुन्धर ! तू इस समय क्यों नहीं फटकर इस कुलघातिनी और क्रूर हृदया स्त्री कुलकलंकिनी को ग्रास करलेती है ! हेपवन ! तू अभीतक इस पापमति दुष्टमणी के स्वासको नहीं रोका ! सखे देवराज ! तुमने इस पिशाचिनी के सिरपर बज्रघात क्यों नहीं किया ? हे रजनि ! तू सदैव दशरथ की चिन्ता हारिणी, श्रांति वारिणी, प्रियकारिणी, माता के समान थी, तुमभी आज समय के प्रभावसे सुखयामिनी

होते २ क्या विभीषिका मयीकालरात्री होगई ? भला तू हुई तो हुई, पर अब प्रभात न हो, जिस्से राम हमारे बनको न जांय ! यदि नितांत ही प्रभात होगा तो अभी हो, अभी आओ, मैं विनय करता हूं। तेरे जाने से राम भी हमारे बनमें जांयगे, और रामके गवनसे प्राणभी देह को छोड़ जांयगे, इसका फल यह है कि इस चांडालिनी हत्यारी का मुख तो न देखना पड़ेगा और हमको भी और किसी को मुख न दिखाना पड़ेगा। हाय हाय ! क्या हुआ, और नहीं सहाजाता, प्राण विदीर्ण होता है। हाय। पापीयसी क्या किया २ हाराम ! हा धर्म्मात्मन्! हा गुरु वत्सल ! हापुत्र ! तुमने इस मन्दभाग्य पामरके औरस में क्यों जन्मलिया ? हाप्रियवद कौशल्ये तुम वंचित हुई ! हा पुरवासी जनों तुम सब अनाथ हुये (पतित और मूर्छित)

मंथरा—(प्रकाश होकर) कैकेई। इतने दिन पीछे मनोरथ पूर्ण हुआ, अब चिंता नहीं, इस समय एककाम करो, राजा के मुखपर जलछिड़को और पंखेसे हवा